अंग्रेजों का सिन्ध विजय

18 वीं सदी के अंत में सिन्ध बलुची जाति के तालपुरी अमीरों के नियंत्रण में था। औपचारिक रूप से सिन्ध के अमीर अफगानिस्तान शासक के अधीन थे। समस्त सिन्ध में वैसे तो चार सामन्ती राज्य थे - खैरपुर, मीरपुर, हैदराबाद और टान्डो मुहम्मद खान। परंतु इनमें से तीन खैरपुर, मीरपुर एवं हैदराबाद ही प्रमुख थे। इन तीनों की अलग अलग राजधानियां थी। ये समानता एवं स्वतंत्रता की दृष्टि से एक दूसरे से पूर्णतया स्वतंत्र थे। इन राज्यों की सीमायें कच्छ तक फैली हुई थी और अंग्रेजी राज्य की सीमाओं से मिलती थी। इनका राज्य प्राकृतिक सम्पदा से भरा-पड़ा था। साथ ही इनके राज्य में करांची का बंदरगाह तथा पश्चिम से व्यापार करने का मुख्य स्थान शिकारपुर और बक्खर (भक्कर) का किला था जो सिन्ध नदी के जलमार्ग की सुरक्षा करता था। ऐसे में अंग्रेजों का सिन्ध की ओर ध्यान जाना लाजमी था।

ईस्ट इंडिया कम्पनी ने 1799 ई में नाथन क्रो को व्यापारिक तथा राजनीतिक सुविधायें प्राप्त करने हेतु सिन्ध भेजा। यद्यपि क्रो का मिशन असफल रहा परंतु सिंध ब्रिटिश साम्राज्यवाद की दृष्टि में आ गया। 1801 ई में फतह अली के मरणोपरांत उसके तीनों भाईयों से ब्रिटिश सरकार ने मित्रतापूर्ण संधि की। इसके अन्तर्गत सिन्ध के अमीरों ने किसी फ्रांसीसी को सिन्ध में नहीं बसने देने का आश्वासन दिया। 1820 में अमीरों ने पुनः आश्वासन दिया कि वे किसी भी यूरोपियन या अमेरिकी को सिंध में बसने नहीं देंगे। आगे एलेक्जेंडर बर्न्स ने पंजाब के शासक को उपहार देने का बहाना बनाकर सिन्धु नदी के जलमार्ग से लाहौर गया। बर्न्स ने सिन्धु नदी के व्यापारिक महत्व तथा इस नदी की उपयोगिता के विषय में पूरी जानकारी उपलब्ध की/करायी जिससे सिन्ध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया जा सके।

इसी बीच 1831 ई॰ में रणजीत सिंह ने लॉर्ड विलियम बैंटिक के समक्ष सिन्ध विभाजन का प्रस्ताव रखा पर वह इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हुआ। इस प्रकार अंग्रेजों ने किसी अन्य शक्ति को सिन्ध में हस्तक्षेप नहीं करने दिया और स्वयं ही 20 अगस्त 1832 में हैदराबाद के अमीर से एक स्वतन्त्र संधि की जिसके अनुसार -

(1) दोनों राज्यों में से कोई भी राज्य एक दूसरे के अधिकृत स्थानों पर ललचाई नजर नहीं डालेंगे।

(2) सिन्धु नदी के माध्यम से व्यापारिक जहाजों के आवागमन की सुविधा अंग्रेजों को प्रदान करना पड़ा। सिन्धु नदी और सिन्ध की सड़कों के प्रयोग की आज्ञा निम्न शर्तों पर देनी पड़ी -

(क) इन मार्गों से सैनिक सामान का न आयात होगा न निर्यात।

(ख) कोई सैनिक सिन्धु नदी में नाव या जहाज नहीं लायेगा।

(ग) कोई भी अंग्रेज व्यापारी स्थायी रूप से सिंध में नहीं रहेगा।

1934 ई॰ में इस सन्धि की पुनरावृत्ति हुई। अंग्रेजों ने अन्य शक्तियों को सिन्ध में घुसने नहीं दिया और स्वयं अपने प्रभाव का विस्तार करता रहा। अंग्रेजों ने पुनः रणजीत सिंह के आक्रमण का भय दिखाकर अप्रैल 1838 ई॰ में हैदराबाद के अमीर को एक और सन्धि करने को बाध्य किया जिसके अनुसार अंग्रेजों ने अमीरों और रणजीत सिंह के सम्बन्धों को ठीक कराने का वचन दिया। एक अंग्रेज प्रतिनिधि हैदराबाद के दरबार में रखा गया जो सिंध में कहीं भी आ-जा सकता था और अपनी प्राण रक्षा के लिये आवश्यक सैनिक अपने साथ रख सकता था।

लेकिन अंग्रेजों की संतुष्टि के लिये यह भी पर्याप्त नहीं था। 1838 ई॰ में अंग्रेज, शाहशुजा और रणजीत सिंह के बीच जो त्रिदलीय संधि हुई उसमें अमीरों को भी सम्मिलित किया गया। सिन्ध के अमीरों को बाध्य किया गया कि शाहशुजा को 25 लाख रुपया दें।

यहीं नहीं अंग्रेजों ने स्वयं भी अमीरों से रुपया लिया। इतना ही नहीं अंग्रेजों ने 1832 ई० में की गई संधि का उल्लंघन करते हुये कहा कि उनकी तथा शाहशुजा की सेनायें अफगानिस्तान पर आक्रमण करने हेतु सिन्ध होकर जायेंगी। 24 दिसम्बर 1838 ई. को खैरपुर के अमीर को एक सन्धि करने के लिये बाध्य किया जिसके अनुसार -

(1) अमीर ने अंग्रेजों की सर्वोच्च सत्ता स्वीकार कर लिया।

(2) अपनी स्थिति के अनुसार अंग्रेजों को सैनिक सहायता तथा युद्ध में अन्य सहायता देने का वादा किया गया।

(3) भक्कर का किला अंग्रेजों को दे दिया गया।

हैदराबाद के अमीर ने इस तरह की संधि करने का विरोध किया। अतएव अंग्रेजों ने आक्रमण करके करांची पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् हैदराबाद के अमीर ने भी अंग्रेजों से डरकर रीतथा 11 मार्च 1839 ई. को संधियाँ कर ली तथा करांची अंग्रेजों को दे दिया गया। इसके साथ ही यह तय हुआ कि अंग्रेज 500 सैनिकों की सहायक सेना अमीर की सीमा में रखेंगे और इसके बदले में अमीर प्रतिवर्ष तीन लाख रुपये देंगे।

जुलाई 1841 ई० में मीरपुर के अमीर के साथ भी इस प्रकार की एक संधि की गई। इन संधियों से सिन्ध एक प्रकार से अंग्रेजों के हाथों में चला गया। अब सिन्ध नाममात्र का अंग्रेजी राज्य में मिलाना बाकी रहा।

फिर भी प्रथम अफगान युद्ध के अवसर पर अमीर अंग्रेजों के प्रति पूर्णतया वफादार रहे और उनकी सहायता करते रहे। परन्तु प्रथम अफगान युद्ध में मिली पराजय छुपाने के लिये तुरंत सिन्ध को जीतने की योजना बना ली गई। लार्ड एलनबरो ने 1842 ई० में सरचार्ल्स नेपियर को सन्धि हेतु सैनिक और असैनिक अधिकार देकर सिन्ध भेजा। सिन्ध के अमीरों पर पहले से ही यह आरोप लगाये गये थे कि वे अंग्रेजों के प्रति वफा-

दार नहीं है अतः नेपियर ने अमीरों से मांग की कि वे सिक्के ढालने का अधिकार अंग्रेजों को दे दें। साथ ही वे उन अंग्रेजी जहाजों को जो सिन्धु नदी में जायें, उन्हें कोयला दें और करांची, थट्टा, सक्कर, रवक्कर और रोहरी तथा इनके बीच के सभी भाग अंग्रेजों को दें।

नेपियर ने खैरपुर के अमीर रुस्तम खाँ की मृत्यु होने के अवसर पर अली मुराद को उसका उत्तराधिकारी बनाना स्वीकार कर लिया जबकि रुस्तम खाँ अभी जीवित था और मीर मुहम्मद को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर चुका था। आगे नेपियर दबाव की राजनीति शुरू की। उसने खैरपुर पर आक्रमण किया और 20 जनवरी 1843 को सभी अमीरों को एक नवीन संधि पर हस्ताक्षर करने के लिये बुलाया। खैरपुर के अमीर के अलावे सभी अमीर उसपर हस्ताक्षर कर दिये। खैरपुर के अमीर ने भी हस्ताक्षर कर देने का वादा किया। उस समय आउट्रम ने भी ही इस संधि पर अमीरों से हस्ताक्षर कराये थे। अतः उसने नेपियर को सूचना भिजवाया कि सभी अमीरों ने नई संधि पर हस्ताक्षर करने का आश्वासन दिया है इसलिये उसे सेना लेकर हैदराबाद आने की आवश्यकता नहीं है पर नेपियर ने उसकी बात नहीं मानी।

नेपियर द्वारा इस तरह निरंतर अपमानित होना एवं सेना लेकर हैदराबाद की ओर बढ़ना विद्रोह का कारण बन गया। बलूची सैनिकों ने आउट्रम के निवास स्थान पर आक्रमण कर दिया। यही घटना युद्ध का कारण बन गई। फरवरी 1843 ई. को नेपियर ने सर्वप्रथम मियानी के युद्ध में बलूचियों को परास्त किया। हैदराबाद पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो गया। मार्च 1843 में उसने डाबो के युद्ध में मीरपुर के अमीर शेर मुहम्मद को परास्त किया तब सिन्ध के सभी अमीरों ने आत्म समर्पण कर दिया। शेर मुहम्मद एक बार और प्रयत्न किया परंतु पुनः उसकी पराजय हुई और वह भाग गया। अगस्त 1843 में सिंध अंग्रेजी राज्य में पूर्णतया सम्मिलित कर लिया गया।

सिन्ध का ब्रिटिश राज्य में मिलाया जाना इतिहास की एक अन्यायपूर्ण कहानी है। युद्ध का कारण आउट्रम पर आक्रमण करना नहीं था, क्योंकि अमीरों ने आउट्रम के शब्दों में उसे बचाने के लिये ठीक समय पर सूचना भेज दी थी। आउट्रम के मना करने के बावजूद नेपियर सेना लेकर हैदराबाद की ओर बढ़ा था। अतः युद्ध का वास्तविक कारण नेपियर का सेना के साथ बढ़ना था न कि बलूचियों का विद्रोहात्मक आक्रमण।

इस तरह हम देखते हैं कि अमीर सदा अंग्रेजों के वफादार बने रहे। ऐसी स्थिति में अंग्रेजों द्वारा सिन्ध की विजय अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति का स्पष्ट प्रमाण थी और सभी व्यक्तियों ने इसकी आलोचना की है। निश्चय ही यह एक उचित कदम नहीं था।

-o-